③ | | + | 6 | = | 6 |

योग पूर्व पृष्ठ — पृष्ठ 3 के अंक — कुल अंक

उत्तर क्र. 1

'किसलय वसना नव वय लतिका' पंक्तियों में रूपक अलंकार है, क्योंकि नवीन बेल रूपी नायिका कोंपलों रूपी वस्त्र धारण किये हुए है।

उत्तर क्र. 2

निबन्ध की परिभाषा 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' के अनुसार —

"यदि गद्य लेखकों की कसौटी है, तो निबंध गद्य की कसौटी है।"

उत्तर क्र. 4

रस के प्रमुख अंगों के नाम निम्नलिखित हैं —

1. स्थायी भाव,
2. विभाव,
3. अनुभाव,
4. संचारी भाव।

6	+	6	=	12
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 4 के अंक		कुल अंक

उत्तर क्र. 6

जिस काव्य में गद्य और पद्य मिश्रित रूप से प्रयोग किये जाते हैं, उसे चम्पू काव्य कहते हैं। संस्कृत साहित्य में इसका प्रचलन अधिक था, हिन्दी में कम है।
उदाहरण - सिद्धराज (श्री मैथिलीशरण गुप्त)

उत्तर क्र. 7

हिन्दी की दो प्रसिद्ध पत्रिकाओं के नाम निम्नलिखित हैं -
1. इंडिया टुडे,
2. अहा! जिन्दगी।

उत्तर क्र. 8

अ. उसके सब काम गलत होते हैं।

ब. कश्मीर का सौन्दर्य मनमोहक है।

BSEMP

12 + 4 = 16

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 5 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

उत्तर क्र. 9

अ. पानी-पानी होना।

वाक्यों में प्रयोग - अपने पुत्र राजू की करतूतों से रमेश उसके मित्र के सामने पानी-पानी हो गया।

ब खून पसीना एक करना।

प्रयोग - सुरेश ने खून पसीना एक करके राम का कर्ज चुकाया है।

उत्तर क्र. 10

अ. सम्भवतः राम घर पर है।

ब जो व्यक्ति आलसी होता है, वह उन्नति नहीं कर सकता।

BSEMP

4

के अंकों का योग

6

16	+	5	=	21
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 6 के अंक		कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

उत्तर क्र. 11

किसी क्षेत्र विशेष में स्थानीय बोली में गाये जाने वाले परम्परागत गीत लोकगीत कहलाते हैं।

उदा.-

पूत को छाई बेटी परम अटरिया,
छोटी लाडी को दयौ वनवास,
हम तो हईयैं आजुल बरहै को पानी,
जित मोरो तित जाये।

उत्तर क्र. 12

कवि के अनुसार 'उषा' शब्द का आशय है - प्रातःकाल का समय। कवि ने महाजलप्लावन के बाद नवीन सृष्टि के समय को उषा कहा है। 'कालरात्रि' से कवि का आशय प्रलयकारी महाजलप्लावन के समय घनघोर अन्धकार से है, जिसमे सृष्टि के समस्त जड़ - चेतन पदार्थ डूब गये थे।

5

7

25	+	5	=	26
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 7 के अंक		कुल अंक

मध्यप्रदेश

उत्तर क्र. 13

निबन्धकार के अनुसार निबन्ध लेखन के समय उत्पन्न होने वाली समस्याएँ निम्नलिखित हैं —
सामग्री की समस्या,
शीर्षक की समस्या,
रुपरेखा की समस्या,
भाषा - शैली की समस्या,
विचार समूह संचित करने की समस्या आदि

उत्तर क्र. 14

द्विवेदी युग के निबन्धों की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं —

1. इस युग में ज्ञान - विज्ञान से संबंधित उच्च स्तरीय निबन्ध लिखे गये हैं।

2. इस युग के निबन्धों में बौद्धिकता एवं गम्भीरता पाई जाती है।

BSEMP

5

प्रश्नों के अंकों का योग

3 निबन्ध रचना की विविध शैलियों का विकास इस युग में हुआ है।

उत्तर क्र. 15

गिरहकटों के गिरोह में चीनी फेरी वाले को अनेक क्रूर यातनाएँ सहन करनी पड़ती थी। उसे घुटनों के बल पिल्ले के समान खड़ा होना पड़ता था। गिरहकट उससे विविध मुद्राओं का अभ्यास करवाते थे, दुर्गन्धित कमरे में बन्द करके उसे हँसने-रोने के अभिनय में पारंगत बनाने का प्रयास करते थे, थोड़ी-सी भी त्रुटि होने पर उसे पीटा करते थे।

इन अनुभवों से उसने छोटी अवस्था में यह सीखा कि धन संचय से संबंधित सभी क्रियायें एक-सी होती हैं।

BSEMP

उत्तर क्र. 17

रामप्रसाद बिस्मिल भारत में पुनर्जन्म इसलि लेना चाहते थे, क्योंकि वे सोचते थे कि प्रत्येक मनुष्य को प्राकृतिक पदार्थों पर समान अधिकार प्राप्त हो, कोई किसी पर हुकूमत न करे। पूरे देश में स्वतंत्रता की स्थापना हो। उस समय भारत गुलाम था, इसलिए वे भारत मे उस समय तक जन्म लेना चाहते थे, जब तक कि भारत के नर-नारी पूर्णतः स्वतंत्र न हो जाये।

उत्तर क्र. 18

'सुन मन मूढ़ सिखावन मेरो' पद में तुलसीदास जी मूढ़ मन को निम्नलिखित सिखावन दे रहे हैं —

1. जो व्यक्ति भगवान् से विमुख हो जाता है, उसे कभी सुख प्राप्त नहीं होता है। उसकी स्थिति

BSEMP

[2]
पृष्ठ के अंकों का योग

सूर्य - चन्द्रमा जैसी होती है। जिस प्रकार भगवान् से विमुख होकर सूर्य - चन्द्रमा भटक रहे हैं, उसी प्रकार भगवान् से विमुख रहने वाला व्यक्ति भटकता रहता है।

2. भगवान् को याद किये बिना मनुष्य विपत्तियों से छुटकारा प्राप्त नहीं कर सकता है।

उत्तर क्र. 19

आत्मकथा और जीवनी में अन्तर निम्नलिखित है —

1. आत्मकथा में लेखक अपने ही जीवन-वृत्त को प्रस्तुत करता है, जबकि जीवनी में लेखक किसी अन्य व्यक्ति के जीवन-वृत्त को प्रस्तुत करता है।

2. आत्मकथा आत्मकथानक शैली में लिखी जाती है, जबकि जीवनी विवरणात्मक शैली में लिखी जाती है।

3. आत्मकथा मे अतिश्योक्ति पूर्ण वर्णन होता है, जबकि जीवनी में वास्तविकता होती है।

उत्तर क्र. 2।

'मैं तुम लोगों से दूर हूँ' एक प्रतीकात्मक कविता है। 'मैं' से कवि का आशय गरीब जनता से है। 'तुम लोगों' से कवि का आशय धनी वर्ग से है। इस कवितापंक्ति के माध्यम से कवि ने गरीब वर्ग और धनी वर्ग के बीच की दूरी को बताया है। आज धनी और निर्धन व्यक्तियों के बीच की खाई दिन - प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, आज दोनों वर्गों के बीच संवाद की कोई स्थिति ही नहीं बनती है। इन दोनों वर्गों के संघर्ष से पूरा सामाजिक जीवन आक्रान्त है।

उत्तर क्र 22

'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' के अनुसार काव्य की परिभाषा –
"जो उक्ति हृदय में कोई भाव जाग्रत कर दे या उस प्रस्तुत वस्तु या तथ्य की मार्मिक भावना में लीन कर दे, वही काव्य है।"

काव्य के भेद निम्नलिखित हैं –
1. श्रव्यकाव्य – जिस काव्य को सुना, पढ़ा अथवा लिखा जा सकता है, उसे श्रव्यकाव्य कहते हैं।
जैसे – कहानी, उपन्यास ।

2. दृश्य काव्य – जिस काव्य को देखा भी जा सकता है, उसे दृश्यकाव्य कहते हैं।
जैसे – नाटक, एकांकी ।

B S E M P 4

4
पृष्ठ के अंकों का योग

(13) 46 + 4 = 50

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 13 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

उत्तर क्र. 23

तीन सयाने से लेखक का तात्पर्य कला, धर्म और विज्ञान से है। लेखक के अनुसार समाज की उन्नति मे इन तीनों सयानों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, इनके बिना समाज उन्नति नहीं कर सकता है। आज के इस सुखद परिवेश को बनाने का श्रेय इन्हीं को है। ये ही समाज को सुखद, सुन्दर और श्रेष्ठ बनाते हैं। वास्तव में ये तीनों सयाने न होकर सहायक हैं। ये तीनों सयाने अपनी-अपनी दिशाओं के श्रेष्ठ साधन हैं, इसी श्रेष्ठता के कारण लेखक ने इन्हें ~~सयानों~~ सयाने की संज्ञा दी है।

4

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर क्र. 24

महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय अग्र लिखित है —

(14) 54 + 4 = 54

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 14 के अंक | कुल अंक

अ. भाषा - शैली →

महादेवी वर्मा जी की भाषा संस्कृत गर्भित, शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। लक्षणा, व्यंजना शब्द-शक्ति का प्रयोग आपके द्वारा किया गया है। आपकी रचनाओं में कोमलकांत पदावली का प्रयोग हुआ है। आपकी शैली में सरसता, मधुरता, भावुकता की त्रिवेणी है। आपकी गद्य - भाषा संस्कृत निष्ठ है। आपके द्वारा शब्द-चयन भावपूर्ण एवं चित्रात्मक है। आपकी शैली भावात्मक एवं विचारात्मक है।

ब. रचनाएँ → 'रश्मि', 'नीरजा', 'नीहार'।

स. साहित्य में योगदान → आपको आधुनिक हिन्दी साहित्य की मीरा कहा जाता है। आप छायावाद व रहस्यवाद की श्रेष्ठ कवयित्री हैं। आप संस्मरणात्मक रेखाचित्रों की सच्ची स्मृति प्रवर्तिका एवं साधिका हैं। आपको हिन्दी गद्य में मूर्धन्य स्थान प्राप्त है।

15

54 + 4½ = 58½

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 15 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

उत्तर क्र. 25

बिहारी का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित है —

अ. भावपक्ष → आपके दोहों का अर्थ गांभीर्य है। आपने दोहों में गागर में सागर भर दिया है। ~~लोक~~ भक्ति, दर्शननीति, लोक-व्यवहार, ज्योतिष से संबंधित दोहे आपने लिखे हैं। आपके द्वारा प्रकृति-चित्रण उद्दीपन रूप में किया गया है।

ब. कलापक्ष →

आपने साहित्यिक ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। ~~श्लेके~~ श्लेष, यमक, अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग आपके द्वारा किया गया है। संस्कृत, अवधी, बुन्देली, खड़ी बोली के शब्दों का प्रयोग आपने किया है। आपने दोहा छंद अपनाया है।

स. रचनाएँ —

'बिहारी सतसई'।

BSEMP

अंकों का योग

(16) [ ] + [ ] = [ ]
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 16 के अंक | कुल अंक

उत्तर क्र. 26.

1 संकेत → तुम्हारी वाणी ___ ___ ___ सकते हो

2 संदर्भ → प्रस्तुत गद्य- पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य-भारती' के 'भोर का तारा' नामक पाठ से ली गई हैं। इसके लेखक 'श्री जगदीश चन्द्र माथुर' हैं।

3 प्रसंग → प्रस्तुत गद्य- पंक्तियों में कर्तव्य का पालन करने की प्रेरणा दी गई है।

4 व्याख्या → माधव, शेखर को प्रेरणा देते हुए कहता है कि शेखर! तुम्हारी वाणी में ओज है और स्वर में प्रवाह है। तुम अपनी रचनाओं से लोगों ~~को~~ में उत्साह भर सकते हो, देशभक्ति की भावना जाग्रत कर सकते हो, तुम अपने स्वर से जन जन-जाग्रति का संदेश दे सकते हो, जिससे लोग कर्तव्य-पथ पर अग्रसर हो जायेगें और युवाओं को प्रेरणा मिलेगी।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

विशेष — अर्थपूर्ण भाषा का प्रयोग है, नाटकीय शैली प्रयुक्त है।

उत्तर क्र. 27

1. संकेत → वह विवर्ण ___ ___ ___ सिरे से।

2. संदर्भ → प्रस्तुत पद्य-पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'साहित्य-भारती' के 'आशा सर्ग से' नामक पाठ से ली गई हैं। इसके कवि 'जयशंकर प्रसाद' जी हैं।

3. प्रसंग → प्रस्तुत पंक्तियों मे नवीन सृष्टि के सृजन का वर्णन है।

4. व्याख्या → कवि कहता है कि महाजलप्लावन के बाद नवीन सृष्टि आज फिर से खुश दिखाई दे रही है। महाजलप्लावन के समय वह (प्रकृति) व्याकुल, दुःखी हो गई थी, किन्तु आज वह प्रसन्न दिखाई दे रही है। प्रलयकाल की वर्षा मे

BSEMP
पृष्ठ के अंकों का योग

सारा संसार डूब गया था, किन्तु अब सृष्टि का नवीन सृजन होने से वह प्रकृति के सभी रसों का आनंद ले रही है।

विशेष → अनुप्रास तथा मानवीकरण अलंकार है, शब्द - शक्ति → लक्षणा तथा शब्द - गुण माधुर्य है।

उत्तर क्र. 28

अ. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक 'निंदा-रस' है।

ब. कुछ लोगों का काम निन्दा करना ही होता है। दूसरों की झूठी कहानियाँ सुनाकर उन्हें बहुत आनन्द प्राप्त होता है और निन्दा करके वे स्वयं को संत समझते हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

19 | 7 + 4 = 11
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 19 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

उत्तर क्र. 29

बधाई - पत्र

7/80, काला - बाग
गंज - बासौदा,
दिनांक 13 मार्च जून

प्रिय सहेली रीना,

सप्रेम नमस्ते !

मैं यहाँ पर कुशलतापूर्वक हूँ और आशा करती हूँ कि तुम भी सकुशल हो ।

मैंने तुम्हारा परीक्षा - परिणाम (हा... 'दैनिक - भास्कर' समाचार पत्र में देखा, चूँकि तुम्हारा अनुक्रमांक मेरे पास था । परीक्षा-परिणाम देखकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि तुम प्रथम - श्रेणी में उत्तीर्ण हुई हो । सर्वप्रथम मेरी ओर हार्दिक बधाई स्वीकार करो । तुम जिस तरह पढ़ाई कर रही थीं, उससे मुझसे यही आशा थी ।

माताजी व पिताजी को मेरी ओर से प्रणाम कहना और छोटे बच्चों को प्यार ।

तुम्हारी अभिन्न सहेली
अ ब स

BSEMP

4

...के अंकों का योग

20

योग पूर्व पृष्ठ 75 + पृष्ठ 20 के अंक — = कुल अंक 75

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

उत्तर क्र 30

अ 'खेलों का महत्व'

रूपरेखा →

1. प्रस्तावना,
2. खेलों के प्रकार,
3. खेलों का महत्व या खेलो से लाभ,
4. उपसंहार।

1 प्रस्तावना →

मानव की स्वभावतः खेलों के प्रति रुचि होती है। प्रारंभ से ही मनुष्य को खेल प्रिय रहे हैं। बच्चे, जवान, बूढे आदि सभी अपनी इच्छानुसार खेल खेलते हैं। यह बात दूसरी है कि बच्चों को पढाई के समय खेलते देख उनके माता-पिता उन्हें डॉंट देते हैं या रोक देते हैं, लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि खेल खेलना बुरी बात है या खेल उन्हें पसन्द नहीं है।

(21) [7.5] + [—] = [7.5]
योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ 21 के अंक   कुल अंक

इनका तात्पर्य यह है कि समय - समय पर खेलना चाहिए । खेलों के बिना छात्रों में अच्छे संस्कार डाले ही नहीं जा सकते । विद्यार्थियों में अनुस अनुशासन की आधारशिला का काम खेल ही करते हैं। स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है । कहा भी गया है —

स्वास्थ्य बिना स्फूर्ति नहीं,
स्फूर्ति बिना कार्य नहीं,
कार्य बिना धन नहीं,
और धन बिना जीवन नहीं ।

2. खेलों के प्रकार →

खेल सामान्यत दो प्रकार के होते हैं —

1. घर में खेले जाने वाले खेल,
2. मैदान में खेले जाने वाले खेल

पहले प्रकार के खेलो को इनडोर गेम्स कहते हैं, जिसके अंतर्गत लूडो कैरम, सापसीढी, वीडियो गेम आदि आते हैं ।

BSEMP

दूसरे प्रकार के खेलों को आउट डोर गेम्स कहते हैं, जिसके अन्तर्गत क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल आदि आते हैं।

3. खेलों का महत्व →

मानव-जीवन में खेलो का अपना महत्त्व है। यह हमारे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होते हैं, इनकी अवहेलना करके हम अपने शरीर का बीमारियों का घर बना लेते हैं। खेलों से हमारे हृदय में प्रेम, सहयोग तथा सामंजस्य के भाव जाग्रत होते हैं।
'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'
अर्थात् फल की चिंता किये बिना कर्म करने की प्रेरणा मानव को खेल के प्रांगण से ही मिलती है। खेल शरीर को स्वस्थ व प्रसन्न रहने के लिए आवश्यक है। स्वस्थ शरीर रहने पर काम करने में मन भी खूब लगता है। सभी कार्यों को करने का पहला साधन शरीर ही है। नामी खिलाडी होने पर धन व शोहरत भी खूब मिलती है। खेल राष्ट्रीय व

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का साधन हैं।

4 उपसंहार →

देर - सबेर हमारी सरकार की आँखे खुल चुकी हैं। वह खेलो के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्व को समझने लगी है। भारत सरकार के अंतर्गत एक खेल मंत्रालय स्थापित किया गया है, जो सफल खिलाड़ियों को सम्मानित करने के साथ-साथ उन्हें आर्थिक सुरक्षाएँ भी प्रदान करता है। गाँवो मे भी खेलो के साधन उपलब्ध कराये जाने चाहिए तथा प्रतिभावान् खिलाड़ियो को खोजना चाहिए, साथ ही उन्हें हर संभव प्रश्रय प्रदान करना चाहिए, तो निश्चित ही एक दिन भारत का सिर भी खेल-जगत मे ऊँचा होगा।

खेल व्यायाम का काम करते हैं, जिससे मुख आभा से मण्डित और तेज का भण्डार होता है।

+ =

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 24 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

उत्तर क्र. 3

निमाड़ी बोली निम्नलिखित स्थानों पर बोली जाती है –
झाबुआ, झारखण्ड, खण्डवा, खरगोन।

उत्तर क्र 5
मात्रिक व वार्णिक छन्द में निम्नलिखित अंतर
मात्रिक छन्द में मात्रा मात्राओं की गणना की जाती है, जबकि वार्णिक छन्द में वर्णों की गणना की जाती है।
मात्रिक छन्द रोला, उल्लाला हैं, जबकि कवित्त व सवैया वार्णिक छन्द हैं।

उत्तर क्र 20.

जब राष्ट्र पर संकट के बादल छाये हों, तो व्यक्ति को अपनी भावनाओं की बलि देकर कर्तव्य-पथ पर अग्रसर होना पड़ता है। इसी भावना के प्रतीक रूप शेखर ने

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 13-02
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक C. No.62085
6. परीक्षा का नाम हायर सेकण्डरी
7. विषय हिन्दी विशिष्ट 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक 13-03-21

पृष्ठ

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

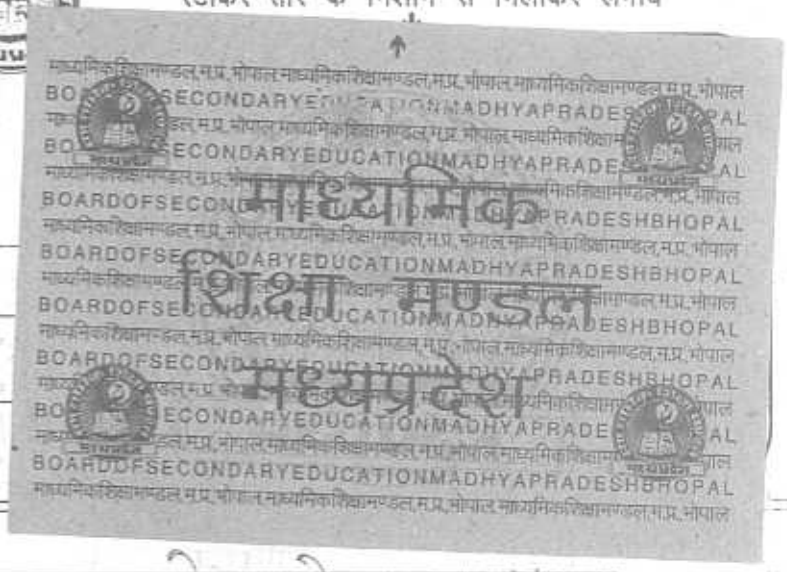

अपने मित्र माधव से प्रेरणा पाकर अपने महाकाव्य को, प्रेम के पन्नों को अग्नि में समर्पित कर दिया और तलवार लेकर देश के दुश्मनों से लड़ने के लि निकल पड़ा। शेखर द्वारा अपने महाकाव्य का अग्निदाह वैयक्तिकता से उठकर समष्टि के लिए समर्पण है।
पहले वह भावुक हृदय और कल्पनाशील कवि था, किन्तु माधव से प्रेरणा पाकर वह 'प्रभात का सूर्य' बन जाता है।

उत्तर क्र. 16.

'भगवान के घर देर है अन्धेर नहीं।'
इस उक्ति का अभिप्राय यह है कि

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 2 के अंक		कुल अंक
87	+	3	=	93

भगवान् सब कुछ देखता है और वह हमेशा
सही और निष्पक्ष न्याय करता है।
कभी - कभी देखने में आता है कि
निर्दोष व्यक्ति भी किसी विपत्ति में फँस जाता
है। किन्तु जिन्हें ईश्वर पर विश्वास होता
है, वे जानते हैं कि एक-न-एक दिन
ईश्वर उन्हें विपत्ति से मुक्ति अवश्य देगा
क्योंकि भगवान् के घर देर है अन्धेर नहीं।

अंकों का योग 3

पृष्ठ

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

BSEMP

...ष्ठ के अंकों का योग